परिचय
ST. XAVIER'S COLLEGE SIMDEGA
WWW.SXCSIM.AC.IN

St. Francis Xavier
Abhijeet Kiro..

संत जेवियर्स कॉलेज
सिमडेगा

''लुसेन्स एट आर्डेन्स''

''आग और प्रकाश''

स्थापना – 2016

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

सीमा खेस्स

उप– संपादक

निशी तिर्की

प्रतिमा परधिया

शशि ज्योति बखला

टंकक

सन्नी बसन्त किन्डो

रेखाचित्रकार

अभिजीत किड़ो

दीपा कुमारी

"शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, व्यक्तित्व से परिचय भी है।"

अपनी रचनाएँ, प्रोत्साहन और प्रतिक्रया भेजने के लिए निम्न पत्ते पर संपर्क करें :-
संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा, पोस्ट–गोतरा, थाना – सिमडेगा, जिला – सिमडेगा,
पिन–835235(झारखण्ड)
संपर्क–8210865183,7654227047

परिचय

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका
जनवरी– मार्च 2026
अंक– 2

मुख्य संपादक – सीमा खेस्स, सहायक प्राध्यापक

उप– संपादक – प्रतिमा परधिया, सहायक प्राध्यापक
शशि ज्योति बखला, सहायक प्राध्यापक
निशी तिर्की, सहायक प्राध्यापक

संपादक मण्डल (विद्यार्थी गण)

1. अंजली इन्दवार (हिन्दी, सेमेस्टर – iii) सत्र : 2023 –27
2. प्रिया मांझी (हिन्दी, सेमेस्टर – iii) सत्र : 2023 –27
3. आसमा डुँगडुँग (हिन्दी, एम. ए. सेमेस्टर – ii) सत्र : 2024 –26
4. शेखर डुँगडुँग (हिन्दी, एम. ए. सेमेस्टर – ii) सत्र : 2024 –26

संरक्षक : डॉ फा. रोशन बाः ये. स.
डॉ. फा. समीर जेवियर भौंरा, ये. स.
फा. ब्रुनो टोप्पो
डॉ. जयन्त कुमार कश्यप

टंकक – सन्नी बसन्त किन्डो (लाइब्रेरी)

रेखाचित्र – अभिजीत किड़ो (हिन्दी, सेमेस्टर – ii) सत्र : 2024 –28

दीपा कुमारी (हिन्दी, सेमेस्टर – vii) सत्र : 2022 –26

संदेश

डॉ. फा. रोशन बाः
प्राचार्य

जीवन ज्ञान रूपी बीज से भरा होता है। जहाँ हर व्यक्ति को अपने अंदर की भावना से जुड़कर ज्ञान के विकास को मजबूती के साथ जोड़ लेना पड़ता है, ताकि जीवन कभी टूट न जाए। ज्ञान का विकास सिर्फ पढ़ाई से नहीं होता है, बल्कि सम्पूर्ण जीवन–अनुभव से होता है। ज्ञान में तर्क करने की क्षमता तभी होती है जब व्यक्ति ज्ञान को कार्यान्वित करता है। इसमें वह अच्छाई और बुराई को जानकर अच्छाई को चुनने का दम रखता है।

व्यक्ति अच्छाई और बुराई को फर्क करने के बावजूद अच्छाई को अपने लिए नहीं चुन पाता है, वह कभी भी अपने जीवन के लिए अच्छाई का फल नहीं बटोर पाता। नकारात्मक विचार वाले व्यक्ति कभी खुश नहीं रहते और दूसरों को खुश देख जलन से भर जाते हैं। वे हर वक्त दूसरों में गलती खोजने में अपना समय बर्बाद कर देते हैं और ऐसा कर अपने को मानसिक और आध्यात्मिक रूप से कमजोर बनाते हैं।

एक विद्यार्थी होने के नाते आपको सही तर्क कर अच्छाई को चुनने की जरूरत है, ताकि आपके जीवन का जड़ शुरू से ही सच्चाई पर बने । जो व्यक्ति आपका बुरा सोचता है, उससे अपने को दूर रखें—क्योंकि बुरा और नकारात्मक सोचने वाला व्यक्ति आपको आगे बढ़ने में कभी भी मददगार नहीं होगा।

ईश्वर पर विश्वास करना सहज होता है, लेकिन मनुष्य पर विश्वास करना बहुत ही कठिन होता है। क्योंकि ईश्वर सरल होता है और मनुष्य जटिल। सच्चा ज्ञान एवं सकारात्मक सोच हमें सरल बनाता है। आप एक सरल व्यक्ति हों या जटिल।

प्रिय पाठकों, 'परिचय' के सभी प्रतिभागियों ने अपने जीवन के अनुभवों को दर्शाया है। उनकी जीवन–यात्रा की संघर्ष पूर्ण कहानी में उन्होंने अपने आप को पहचाना है। उनकी अंतरात्मा की गहराई को उन्होंने समाज के साथ साझा किया है, ताकि उनकी जीवन की जड़ें मजबूत बन पाएं।

संदेश

डॉ. फा. समीर जेवियर भौंरा
उप–प्राचार्य सह परीक्षा नियंत्रक

प्रिय पाठकों और शुभचिंतकों,
आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!

जैसा कि सभी करते हैं, मैनें भी पिकनिक का भरपूर आनंद लिया। मुझे दो पिकनिक पर जाने का अवसर मिला – एक सिमडेगा के पास ही शंख नदी और दूसरा तोरपा के पास। दोनों ही स्थानों पर मैंने एक समानता देखी – घने जंगल में ऊँचे – ऊँचे पत्थरों से बहती नदी। नदी के निरंतर प्रवाह से चट्टानें चमक रही थीं, इन दोनों नदियों के लिए मजबूत चट्टानों ने ही रास्ता बनाया है। इन नदियों ने न केवल अपनी शक्ति से, बल्कि दृढ़ता और अनुकूलन क्षमता से भी इन बाधाओं को पार किया है। नदियों के जीवनदायी जल ने आसपास की चट्टानी बाधाओं को हटा दिया है, स्थिर और जीवनदायी नदियों ने भू – दृश्य को रूपांतरित कर दिया है। यह क्षेत्र इतना सुंदर है कि कई लोग यहाँ अपने परिवार और दोस्तों के साथ पिकनिक और जीवन का आनंद लेते हैं।

महिलाओं का सषक्तिकरण जीवनदायी जल के समान है, जो न केवल बल से, बल्कि दृढ़ता और अनुकूलन क्षमता से भी सभी प्रकार की बाधाओं को तोड़ सकता है और परिवार, रिष्तेदारों, समाज और राष्ट्र के परिदृश्य को बदल सकता है।

संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा नारी सशक्तिकरण का समर्थन करता है जो सामाजिक–राजनीतिक ''सत्ता–साझेदारी'' की संकीर्ण अवधारणा से परे है, और इसका समानता के लक्ष्य को प्राप्त करना है जहाँ पुरूष और स्त्री दोनों को जीवन की समान, अपरिहार्य गरिमा और विशिष्ट गौरव प्राप्त हो, क्योंकि दोनों को परम सत्ता ने अपनी छवि और स्वरूप में बनाया है। प्रत्येक छात्र को दूसरों के प्रति संवेदनशील होने और प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्टता को स्थान देने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। नारी सशक्तिकरण का विचार व्यक्ति के जीवन आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों के पोषण में सहायक है, ताकि वे शांत और गहन लचीलेपन में विकसित हो सकें। यह छात्रों–लड़कियों और लड़कों दोनों को उस स्थान को पूरी तरह से ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है जो ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए बनाया है, जो ऊपर उल्लिखित सत्ता साझेदारी की सामाजिक–राजनीतिक अवधारणा से परे है, बल्कि समाज, परिवार और राष्ट्र में पाई जाने वाली मानवीय कमजोरियों की बाधा को दूर करता है। यह शिक्षा, चरित्र निर्माण और गहन आध्यात्मिकता की सहायता से परम सत्ता द्वारा प्रदत्त स्थान, स्वतंत्रता और क्षमता को साकार करने की भी अपेक्षा करता है।

संदेश

रेभ. फा. ब्रुनो टोप्पो
उप– प्राचार्य सह ट्रेजरर
संत जेवियर्स महाविद्यालय, सिमडेगा

आपकी पहचान आपके हाथ....

प्रत्येक मनुष्य ईश्वर की एक अदभुत, अद्वितीय और सर्वश्रेष्ठ रचना है। माँ के गर्भ से ही ईश्वर ने मानव को एक अनोखी पहचान से नवाजा है। इस संसार में करोड़ों लोग रहते हैं, परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि हर व्यक्ति की अपनी एक अलग पहचान होती है। मानवकी पहचान नाम एवं रंग–रूप से नहीं बनती बल्कि उसके व्यवहार, चरित्र, आदर्श, मूल्यों और कर्मों से बनती है। हम ईश्वर की नजर में अनमोल हैं। हर व्यक्ति को ईश्वर ने अपने विशेष उद्देश्य के लिए बनाया है और उन्हें एक विशेष क्षमता प्रदान किया है। हमें दूसरों को नकल करने के चक्कर में अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए।

युवा कभी–कभी यह सोचते हैं कि शायद उनके पास अवसर एवं संसाधन कम हैं, इसलिए दुनिया में पहचान बना पाना असंभव है। इतिहास गवाह है कि महान लोग अकसर साधारणएवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में पैदा हुए हैं। पहचान परिस्थितियों से नहीं बल्कि अपने दृष्टिकोण और कर्म से बनता है। कभी–कभी सबसे उज्ज्वल तारे अंधेरे आकाश में ही चमकते हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पहचान हमें जन्म से नहीं मिलती, पहचान हमें कर्मों से गढ़नी पड़ती है।

जीवन में पहचान और कर्म का अन्यान्य संबंध है। यह प्रक्रिया कठिन परिश्रम, अनुशासन, लगन, धैर्य एवं समर्पण की माँग करती है। इसका परिणाम इतना मूल्यवान होता है कि यह व्यक्ति को समाज में स्वर्णिम नाम और विषिष्ट सम्मान दिलाती है। अलबर्ट आइंस्टीन, महात्मा गाँधी, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम एवं मदर तेरेसा जैसे महान व्यक्तित्व इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिन्होंने न केवल अपने परिवार एवं समाज को गौरवान्वित किया बल्कि आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा के स्रोत बने।

जिस प्रकार सोना आग में तपकर सुंदर आभूषण के रूप में परिणत होता है, उसी प्रकार मनुष्य त्याग, तपस्या, मेहनत एवं बलिदान रूपी अग्नि में तपकर श्रेष्ठ बनता है। एक पुरानी कहावत है ''नाम उसी का होता है जो मेहनत से चमकता है।'' अतः कर्म ही पहचान का आधार है। जब हम सभी ''पहचान विषय'' पर मनन–चिन्तन कर रहें हैंतो हम, अपने जीवन को कर्म प्रधान बनाने की प्रेरणा लें। अपनी पहचान को कर्म से इस कदर चमकाएं कि वह हमेशा के लिए अमिट बन जाए। आपकी पहचान और आपका भविष्य आपके हाथों में ही है।

संपादकीय टीम के प्रति मैं हृदय से अभारी हूँ। आपकी मेहनत, समपर्ण और सहयोग ने इस कार्य को और भी सार्थक बना दिया। आप सभी का सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा।

संदेश

डॉ. फा. नाबोर लकड़ा
विज्ञान समन्वयक

शिक्षा के क्षेत्र में समाज की आवयकताओं को देखते हुए समय–समय पर नई नीतियाँ लागू की गईं हैं। अपने देश की स्थिति को देखें तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी का परिणाम है। समाज तथा अन्य उत्पादन घटकों में बहुत परिवर्त्तन हुए है जिनको सम्बोधित करना अनिवार्य है। समाज की मांग के मद्देनजर उनके समाधान के उपाय लाना जरूरी है। देखा गया है कि गतिशील समाज हमेशा चुनौतियाँ देते आया है जिनको अवसर में बदला जा सकता है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विभिन्न आयामों पर विचार एवं मंथन करना अति आवश्यक है।

भारतीय सामाजिक संरचना से हमें ज्ञात होता है कि समाज विभिन्न वर्गों में विभक्त है मुख्यतः धनी और गरीब परिवार। जहाँ तक शिक्षा की बात की जाय तो इसकी उपलब्धता और व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्रों में लचर स्थिति में है। भवनों की संरचना,शिक्षकों की उपस्थिति एवं विद्यार्थियों की कम संख्या शिक्षण व्यवस्था को झकझोर देती है। अतः ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा को कारगर बनाना जरूरी है। इसमें सरकारी शिक्षा विभाग की विशेष निगरानी चाहिए। साथ ही पूरे जोश के साथ पठन–पाठन को एक आन्दोलन का रूप लेना है। लोगों को जागरूक करना तथा शिक्षा से सर्वांगीण विकास की बात करनी है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाएँ सीमित हैं और ऐसी स्थिति में रहकर विद्यार्थियों को बेहतर परिणाम देना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति जहाँ सबकी शिक्षा एवं विकास की बात करती है, यह तभी संभव होगा जब हर विद्यार्थी अवसर और जिम्मेदारियों को समझे और प्रतिदिन असुविधाओं के बावजूद अपने कामों में लगा रहे। रास्ते पर चुनौतियाँ आयेंगी पर जो व्यक्ति बाधाओं पर विजय की तीव्र इच्छा रखता है वही सार्थक शिक्षा ग्रहण कर जीवन को सफल बनाएगा। नेल्सन मंडेला कहते हैं – ''शिक्षा ही वह सशक्त हथियार है जिसको अपना कर समाज में परिवर्तन ला सकते हैं।''

संदेश

डॉ. जयन्त कुमार कश्यप
कार्डिनेटर
आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी)

''परिचय'' के दूसरे अंक के प्रकाशन पर अपार प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका अपने नाम की सार्थकता को सिद्ध करती हुई परिचय का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। इसमें छपने वाली छात्र–छात्राओं की रचनाएं, सुंदर डिजाइन, संपादक मंडल द्वारा रचनाओं का विवेकशील चयन व संपादन और पत्रिका में आने वाले संदेश समग्र रूप से संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा का संपूर्ण परिचय प्रस्तुत करने में सक्षम है। पत्रिका की सामग्रियों को पढ़कर अनुमान लगाया जा सकता है कि एक सह्रदय कवि, विवेकशील रचनाकार और आलोचकीय दृष्टिकोण वाले प्रबुद्ध चिंतक धीरे–धीरे अपना आकार ले रहे हैं। इस बात का भी गहरा संतोष है कि पत्रिका में कॉलेज परिसर का कोई कोना छूटा नहीं है। यह संपादक और संपादक मंडल में शामिल सदस्यों की सुलझी और दूरदर्शी नीतियों का सुखद परिणाम है। इसके लिए मैं संपादकों को विशेष धन्यवाद देता हूं।

पत्रिका में छपने वाली सामग्रियों की विषय–विविधता मेरे लिए रोचक है। इसमें वर्तमान समय का स्त्री विमर्श, सांप्रदायिक मुद्दे, युवा विषयक प्रसंग, प्रकृति संबंधी रचनाएं और समाजपरक लेख के साथ–साथ भाषा और व्याकरण जैसे गंभीर विषयों पर जानकारी निःसंदेह लाभप्रद और संग्रहणीय होगी। पत्रिका में युवा रचनाकारों और सृजन के अनगिनत बिखरे रंगों को देखा और पहचाना जा सकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ''परिचय'' का यह दूसरा अंक अपनी सामग्री की उत्कृष्टता और उर्वर सृजनशीलता के लिए लंबे समय तक स्मृति में बसी रहेगी।

संदेश

डॉ. अनिमेश रॉय
सहायक प्राध्यापक,
अंग्रेजी विभाग एवं अनुसंधान समन्वयक

किसी महाविद्यालय की पत्रिका को केवल एक 'वृत्तांत' (Chronicle) न मानकर, उसे विविध बौद्धिक एवं सृजनात्मक मस्तिष्कों द्वारा निर्मित एक 'परिवेश' के रूप में देखना, तीव्र डिजिटल परिवर्तनों से संतृप्त इस युग में विद्यार्थियों के मानस की वास्तुकला (Architecture of the mind) को समझने की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। निरंतर विकसित होते इस शैक्षणिक परिदृश्य में, पत्रिका का यह अंक ऐसी कविताएँ प्रस्तुत करने का प्रयास करता है जो मन को झंकृत करे, ऐसे निबंध जो विमर्श को जन्म दे और ऐसी समीक्षाएँ जो हमें आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करे। इस अंक की प्रत्येक प्रविष्टि आपको रुकने, सोचने और अंततः अपनी अभिव्यक्ति देने के लिए विवश करेगी।

संपादकीय

शशि ज्योति बखला
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग

"परिचय" हमारे महाविद्यालय की रचनात्मक चेतना का वह स्वर है, जिसमें युवा मन के सपने, विचार और संकल्प एक साथ आकार लेते हैं। हर त्रैमासिक अंक का प्रत्येक पृष्ठ विद्यार्थियों की प्रतिभा, कल्पनाशीलता और आत्मविश्वास का सजीव प्रमाण है।

कविता की कोमल भावनाएँ, कहानियों की सशक्त कल्पनाएँ, लेखों की गंभीर दृष्टि और रचनात्मक अभिव्यक्ति की विविध विधाएँ मिलकर "परिचय" को एक सशक्त साहित्यिक मंच बनाती हैं।

यह पत्रिका हमारे महाविद्यालय की उपलब्धियों, सांस्कृतिक गतिविधियों, शैक्षणिक उत्कृष्टता और युवा ऊर्जा का दर्पण है। यह हमें स्वयं से, अपने समाज से और अपनी जड़ों से जोड़ने का माध्यम है। यह हमें याद दिलाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने भीतर अनंत संभावनाएँ लिए हुए है—बस आवश्यकता है उन्हें पहचानने और अभिव्यक्त करने की।

इस अंक को साकार करने में संपादक मंडल के सहयोग, मार्गदर्शक शिक्षकों के मार्गदर्शन और सभी रचनाकारों के समर्पण का विशेष योगदान रहा है। मैं सभी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

आशा है कि "परिचय" का यह अंक पाठकों को प्रेरणा, उत्साह और नई दृष्टि प्रदान करेगा तथा आने वाले समय में और भी अधिक प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति का अवसर देगा।

आइए, हम सभी मिलकर "परिचय" के माध्यम से अपनी रचनाशीलता और उत्कृष्टता का सशक्त प्रतीक बनें तथा अपने महाविद्यालय की गौरवशाली परंपरा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

विषय सूची

1.सिमडेगा :प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम धरोहर	:	64 – 65
2. बदलते समाज में युवाओं की भूमिका	:	66 – 68
3. आधुनिक युवाओं के बीच बढ़ता धार्मिक संघर्ष	:	69 – 71
4. समाज	:	72
5. बदलता हुआ गाँव–विकास की नई कहानी	:	74 – 75
6. अनजाना सफर, अपना–सा घर	:	76 – 77
7. बहाने और हौसले	:	78 – 79
8. कोरोया के फूल और मैं	:	80
9. महिला सशक्तिकरणः विकास की नई दिशा	:	82 – 85
10.महिला सशक्तिकरण	:	86 – 88
11. आज की नारी	:	89 – 90
12. क्या नारी एक कलंक है	:	91
13. एक कदम आत्मनिर्भरता की ओर	:	92
14. नारीः एक मशाल, एक मिसाल	:	93 – 94
15. सामयिकी	:	96
16. सामान्य ज्ञान	:	98
17. हिन्दी में होने वाली सामान्य गलतियाँ	:	100

लेख

सिमडेगा: प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम धरोहर

अर्पण तिर्की
हिंदी (सेम–vii)
सत्र : 2022 – 26

झारखंड राज्य के दक्षिणी –पश्चिमी भाग में स्थित सिमडेगा जिला प्राकृतिक सौंदर्य, हरियाली और आदिवासी संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह जिला छोटानागपुर पठार का हिस्सा है और अपनी भौगोलिक बनावट, घने जंगलों, पहाड़ियों तथा नदियों के कारण अत्यंत आकर्षक दिखाई देता है। यहाँ का मौसम, हरियाली और शांत वातावरण मन को शांति प्रदान करता है। प्रकृति प्रेमियों तथा पर्यटकों के लिए सिमडेगा एक अद्भुत स्थल है। यहाँ की ऊँची–नीची, उबड़–खाबड़ भूमि प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोरम बनाती है।

सिमडेगा जिले का सबसे बड़ा प्राकृतिक आकर्षण इसके घने जंगल हैं। साल, सागवान, महुआ, पीपल, बांस, करंज, कटहल ,आम ,नीम , जामुन जैसे वृक्ष यहाँ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। ये जंगल न केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखते हैं, बल्कि वन्यजीवों का सुरक्षित आश्रय भी है। यहाँ हाथी, हिरण, खरगोश, लोमड़ी, बंदर, मोर और अनेक प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। सुबह–सुबह पक्षियों की चहचहाहट और जंगलों से आती ठंडी हवा मन को सुकून प्रदान करती है।

सिमडेगा जिले में कई छोटी–बड़ी नदियाँ और झरने हैं, जिनमें शंख ,देव, गिरमा और पालामाड़ा आदि नदियाँ प्रमुख हैं। ये नदियाँ न केवल सिंचाई का साधन हैं, बल्कि आसपास के गाँवों के जीवन का आधार भी हैं। नदी किनारे बसे गाँव, हरे–भरे खेत और मछलियों से भरे जलस्रोत इस क्षेत्र की प्राकृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं।

इस जिले में प्रकृति ने एक ऐसी खूबसूरती को अपने दामन में समेटे हुए हैं, जहाँ लगभग हर कोने में प्रकृति की खूबसूरती लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करती है। इन पर्यटक स्थलों में केलाघाघ डैम, राजाडेरा, कोबांग डैम, दनगद्दी, बुदाधार, शंख नदी

तट पर स्थित संगम स्थल, लरवा बांध (कोलेबिरा), सतकोठा (जलडेगा), बसतपुर, दोभाया डैम आदि प्रमुख हैं। जहाँ नव वर्ष के अवसर पर काफी संख्या में लोग पिकनिक मनाने पहुंचते हैं। यहाँ के दर्शनीय स्थलों में रामरेखा धाम, वन दुर्गा, भँवर पहाड़ (कोलेबिरा), भैरव बाबा पहाड़ी (फुलवाटांगर), केतुंगा धाम (बानो) आदि प्रसिद्ध हैं, जो अपने अनुपम धरोहर के लिए पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

सिमडेगा में मुख्य रूप से आदिवासी समुदाय निवास करते हैं, जैसे—उरांव, मुंडा, खड़िया आदि। इन समुदायों का जीवन प्रकृति से जुड़ा हुआ है। जंगल, नदी और पहाड़ उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं। सरहुल, करम और सोहराय जैसे पर्वों में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

यहाँ की भूमि कृषि के लिए उपयुक्त है—धान, मक्का , गेहूँ, दालें और सब्जियाँ उगाई जाती हैं। वर्षा ऋतु में खेतों की हरियाली देखने लायक होती है। लहलहाती फसल, बैलों के साथ काम करते किसान और मिट्टी की खुशबू ग्रामीण जीवन की सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करती है। अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण सिमडेगा में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। यदि यहाँ सड़क, आवास और अन्य सुविधाओं का विकास किया जाए, तो यह जिला एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन सकता है। प्राकृतिक पर्यटन, इको—टूरिज्म और आदिवासी संस्कृति आधारित पर्यटन के लिए सिमडेगा अत्यंत उपयुक्त है।

इस जिले को पर्यावरण संरक्षण की अति आवश्यकता है, यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य तभी सुरक्षित रह सकता है, जब जंगलों की कटाई रोकी जाए और विभिन्न जल स्रोतों का संरक्षण किया जाए। बढ़ती जनसंख्या और विकास के नाम पर हो रहे अंधाधुंध दोहन से प्रकृति को खतरा हो सकता है, इसलिए आवश्यक है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाया जाए।

****

बदलते समाज में युवाओं की भूमिका

माहिम हयात
इतिहास (सेम ii)
सत्र : 2024 – 28

किसी भी देश का भविष्य युवाओं के कंधों होता है। युवा, सिर्फ उम्र का दौर नहीं, बल्कि सोच, विचार, ऊर्जा और बदलाव का प्रतीक है। जैसे–जैसे समाज बदल रहा है, वैसे–वैसे युवाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। आज के युवा सिर्फ अपने सपनों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज की समस्याओं को समझने और उनका समाधान ढूंढने का साहस भी रखते हैं। शिक्षा, रोजगार,पर्यावरण,स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दे पर युवा अपनी आवाज उठाते नजर आते हैं। सोशल मीडिया जैसे माध्यमों के जरिए युवा अपने विचारों को बड़े मंच तक पहुंचाने में सक्षम हुए हैं।

बदलते समाज में युवाओं की सबसे बड़ी भूमिका शिक्षित और जागरूक नागरिक के रूप में देखी जा सकती है। युवा न सिर्फ खुद सीख रहे हैं बल्कि अन्य लोगों को भी जागरूक कर रहे हैं–चाहे वह बेटी बचाओ अभियान हो, स्वच्छता का संदेश हो या फिर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प। युवाओं की भूमिका देश के विकास में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। स्टार्टअप, नवाचार और तकनीकी के माध्यम से युवा रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहे हैं। डिजिटल भारत का सपना युवाओं की मेहनत और रचनात्मकता के बिना अधूरा है समय के साथ युवाओं ने कई अलग–अलग रूपों में अपनी जिम्मेदारी निभाई है–

1. **सामाजिक परिवर्तन के वाहक**
   युवाओं ने अंधविश्वास, जातिवाद, लिंग भेद और पुरानी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाए हैं। समाज में समानता और न्याय के लिए आवाज उठाएं हैं तथा आंदोलन भी चलाए हैं।
2. **शिक्षा और जागरूकता का प्रसार**
   शिक्षित युवाओं ने लोगों को शिक्षा का महत्व समझाया, डिजिटल लिटरेसी, बढ़ाई और गाँव – गाँव तक जागरूकता फैलाई।
3. **राजनीतिक जागरूकता और नेतृत्व**
   आज के युवा चुनाव, आंदोलन और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं तथा कई युवा नए नेता के रूप में उभर रहे हैं।
4. **राष्ट्रीय एकता और देश भक्ति**

आपदा, एन एस एस, एन सी सी तथा विभिन्न संगठनों एवं सेवा कार्यों के माध्यम से युवाओं ने देश भक्ति और राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया है।

5. **आर्थिक विकास में योगदान**

उद्यमिता, रोजगार सृजन और नई सोच के साथ युवा देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रहे हैं।

6. **महिला सशक्तिकरण और समानता का समर्थन**

युवा पीढ़ी ने महिला अधिकारों, शिक्षा और स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सके।

बदलते समय में युवा सिर्फ भविष्य ही नहीं बल्कि वर्तमान समय के भी शिल्पकार हैं। उनकी सोच, शक्ति और उत्साह से ही समाज एक नई दिशा की ओर आगे बढ़ता है।

बदलते समाज में युवाओं की भूमिका पर देश–विदेश के कई महान नायकों, विचारकों और नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए हैं और कई लोगों ने अपना जीवन युवा शक्ति को जागरूक करने में समर्पित किया है, जो निम्नलिखित है–

स्वामी विवेकानंद

"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो।"

–स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं को आत्मविश्वास,राष्ट्र सेवा और चरित्र –निर्माण का संदेश दिया।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

"युवाओं में सपने देखने और उन्हें पूरा करने का साहस होना चाहिए।"

–डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने युवाओं को विज्ञान, शिक्षा और राष्ट्रीय विकास से जोड़ने का कार्य किया है।

महात्मा गांधी

"अगर युवा जाग जाए तो क्रांति निश्चित है।"

–गांधी जी ने अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम का आधार बनाया।

सुभाष चंद्र बोस

"तुम मुझे खून दो ,मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"

–इन्होंने युवाओं में त्याग, बलिदान और राष्ट्रभक्ति की भावना भरी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू
"युवा देश की सबसे बड़ी पूंजी होती है।"
–नेहरू जी ने शिक्षा और वैज्ञानिक सोच को युवाओं के विकास का मूल बताया।

युवाओं के विकास में योगदान देने वाले महान लोग–
१.स्वामी विवेकानंद
रामकृष्ण मिशन के माध्यम से युवा शिक्षा और सेवा।
२.डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
विद्यार्थियों के साथ संवाद, विजन 2020, युवा प्रेरणा स्रोत।
३. महात्मा गांधी
युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम में जोड़ने का काम।
४. सुभाष चंद्र बोस
इंडियन नेशनल आर्मी के माध्यम से युवाओं को नेतृत्व प्रदान किया।
५. भगत सिंह
युवाओं को क्रांतिकारी चेतना और देश भक्ति का प्रतीक बनाया।
६. ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले
शिक्षा के माध्यम से युवा और सामाजिक सुधार।
७. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
युवाओं को संविधान, अधिकार और शिक्षा का महत्व समझाया।
अंततः कहां जा सकता है कि बदलते समाज की दिशा और दशा को तय करने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। युवा अपनी ऊर्जा, नई सोच, साहस और तकनीकी समझ के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। आज के युवा केवल भविष्य के नागरिक नहीं, बल्कि वर्तमान का सक्रिय निर्माता है। यदि युवाओं को सही मार्गदर्शन, शिक्षा और अवसर मिले, तो वे सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर, समानता, सद्भाव और प्रगति पर आधारित समाज का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है की युवा अपनी जिम्मेदारियों को समझें और राष्ट्र व समाज के विकास में ईमानदारी और समर्पण के साथ योगदान दें।
****

आधुनिक युवाओं के बीच बढ़ता धार्मिक संघर्ष

खुशी कुमारी
इतिहास (सेम-ii)
सत्र : 2024 – 28

धर्म मानव समाज की आत्मा है। प्राचीन काल से ही धर्म ने मनुष्य को नैतिकता,अनुशासन, सह–अस्तित्व और करुणा का पाठ पढ़ाया है। प्रत्येक धर्म का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को बेहतर इंसान बनाना रहा है, न कि दूसरे मनुष्यों से अलग या श्रेष्ठ सिद्ध करना। किंतु वर्तमान सामाजिक परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि धार्मिक संघर्ष एक गंभीर और जटिल समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। तकनीकी युग में पली–बढ़ी युवा धार्मिक विचारों से जितनी तेजी से जुड़ रही है, उतनी ही तेजी से वह भावनात्मक उग्रता और कट्टर सोच की ओर भी बढ़ रही है। धर्म, जो कभी शांति का प्रतीक था, अब कई बार टकराव और तनाव का कारण बनता जा रहा है। आज का धार्मिक संघर्ष केवल पूजा पद्धति या आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीति, सामाजिक पहचान, आर्थिक असमानता और मानसिक सुरक्षा की गहराई से जुड़ा हुआ है। ऐसे में धार्मिक संघर्ष और उसके समाधान पर गंभीर विचार आवश्यक हो जाते हैं।

प्राचीन काल में धर्म जीवन का एक आंतरिक और निजी पक्ष माना जाता था, जबकि आज वह बाहरी पहचान और सामाजिक प्रदर्शन का माध्यम बनता जा रहा है। धार्मिक प्रतीक, नारे और आडंबर आस्था से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। युवाओं में यह भावना पनप रही है कि धर्म उनकी पहचान का मुख्य आधार है और इसी के माध्यम से वे स्वयं को समाज में स्थापित कर सकते हैं। इस परिवर्तन ने धार्मिक चेतना को अधिक भावनात्मक और कम विवेकपूर्ण बना दिया है। जब धर्म समझ का विषय न रहकर भावनाओं का हथियार बन जाता है, तब असहमति भी अपमान में बदल जाती है और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है।

धार्मिक संघर्ष के पीछे अनेक सामाजिक और राजनीतिक कारण कार्य करते हैं। राजनीति में धर्म का प्रयोग सत्ता प्राप्ति का एक प्रभावी साधन बन चुका है। जनता को यह विश्वास दिलाया जाता है कि उनका धर्म संकट में है, जिससे भय और आक्रोश की भावना उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त इतिहास की एकतरफा और चयनात्मक व्याख्या भी संघर्ष को बढ़ावा देती है। अतीत की घटनाओं को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत कर नई पीढ़ी के मन में कटुता और प्रतिशोध की भावना भर दी जाती है। आज की युवा पीढ़ी, जिसने उन घटनाओं को स्वयं नहीं जीया, फिर भी उनके नाम पर संघर्ष करने लगती है। इस प्रकार धार्मिक संघर्ष वर्तमान की समस्या न होकर अतीत की गलत व्याख्याओं का बोझ बन जाता है।

आज की युवा पीढ़ी आर्थिक समस्याओं से भी जूझ रही है। बेरोजगारी, महंगाई, प्रतिस्पर्धा, भविष्य की अनिश्चितता और सामाजिक दबाव युवाओं में तनाव और कुंठा उत्पन्न करते हैं। जब व्यक्ति को अपने जीवन में स्थिरता और सुरक्षा नहीं मिलती, तब वह भावनात्मक सहारे की तलाश करता है। कई बार यह सहारा धर्म के रूप में सामने आता है, परंतु जब धर्म, आशा और शांति देने के बजाय आक्रोश और कट्टरता का माध्यम बन जाता है, तब धार्मिक उग्रता जन्म लेती है। व्यक्ति अपनी असफलताओं और असंतोष का कारण किसी अन्य धर्म या समुदायों को मानने लगता है। इस प्रकार धार्मिक संघर्ष के पीछे केवल धार्मिक मतभेद नहीं, बल्कि गहरी सामाजिक और मानसिक असुरक्षा भी कार्य करती है।

तकनीकी युग ने धार्मिक संघर्ष को नई दिशा और गति प्रदान की है। सोशल मीडिया आज विचारों और अनुभव के आदान–प्रदान का सशक्त माध्यम बन चुका है, लेकिन यह नफरत और भ्रामक सूचनाओं का भी बड़ा स्रोत बन गया है। अधूरे तथ्यों, भड़काऊ भाषणों और भावनात्मक वीडियो के माध्यम से धार्मिक भावनाओं को उकसाया जा रहा है। आज के युवा, जो अधिकांश समय सोशल मीडिया पर सक्रिय है, बिना सत्य की जाँच किए ऐसी सामग्री पर विश्वास कर लेती है। बार–बार इस प्रकार की सामग्री देखने से कट्टर विचार भी सामान्य प्रतीत होते। परिणाम स्वरूप धार्मिक असहिष्णुता बढ़ जाती है और आगे चलकर समाज संघर्ष और हिंसा का कारण बनती है।

धार्मिक संघर्ष का प्रभाव केवल व्यक्तिगत या सामुदायिक स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव पूरे समाज और राष्ट्र पर पड़ता है। समाज में आपसी विश्वास कमजोर हो जाता है और विभिन्न समुदायों के बीच संदेह की भावना बढ़ जाती है, जिससे सामाजिक सौहार्द और भाईचारा प्रभावित होता है। युवा पीढ़ी शिक्षा, रचनात्मक और विकास की ओर बढ़ने के बजाय नकारात्मक सोच और आक्रोश में उलझ जाती है। राष्ट्र की ऊर्जा, विकास कार्यों के बजाय संघर्षों में नष्ट होने लगती है। परिणामतः यह स्थिति देश की सांस्कृतिक विविधता, एकता और सामाजिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बन जाती है।

धार्मिक संघर्ष का समाधान टकराव में नहीं बल्कि संवाद और समझ में निहित है। सर्वप्रथम धर्म के मानवीय और नैतिक स्वरूप को समझना आवश्यक है। शिक्षा क्षेत्र में सहिष्णुता, संवैधानिक मूल्य और सर्वधर्म समभाव को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए। युवाओं में आलोचनात्मक और तार्किक सोच विकसित करना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे किसी भी विचार को आँख मूंद कर स्वीकार न करें। सोशल मीडिया का जिम्मेदारी पूर्वक उपयोग तथा डिजिटल साक्षरता के माध्यम से नफरत फैलाने वाली सामग्री पर रोक लगाई जा सकती है। विभिन्न धर्मों के बीच संवाद, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देकर है धार्मिक सौहार्द की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज धार्मिक संघर्ष किसी एक कारण का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानसिक परिणाम का प्रभाव है। धर्म कभी भी हिंसा, घृणा या विभाजन का समर्थन नहीं करता। समस्या तब उत्पन्न होती है जब मनुष्य धर्म को समझने के बजाय उसका उपयोग करने लगता है। यदि आज की पीढी धर्म को श्रेष्ठता की दीवार नहीं, बल्कि मानवता को जोड़ने वाला सेतु बन जाए, तो धार्मिक संघर्ष को रोका जा सकता है। एक शांत, सहिष्णु और समरस समाज का निर्माण तभी संभव है, जब धर्म मनुष्य के भीतर की संवेदनशीलता और करुणा को जागृत करे।

****

समाज

निकिता कुजूर
हिंदी (सेम-iii)
सत्र : 2023 – 27

ये जो समाज है, ये आईना भी है, सवाल भी,
कभी दुआओं की छाँव, कभी काँटो का जाल भी।
जो चल पड़े अपने ही रास्तों पर,
उसे रोकने के लिए खड़ी एक दीवार भी।

कभी नाम कभी इज्जत, कभी रिवाजों का बोझ,
हर कदम पर सौ बातें, लोग क्या कहेंगे?
जो उड़ना भी चाहे, टूटना भी चाहे।

समाज की सोच तो अपनी है जो चाहो वो बनो
रास्ते चाहे मुश्किल हों, मन को मजबूत बनाना है।
अपनी रक्षा खुद कर, कमियों को मत तोड़।

शिक्षित हो या अशिक्षित
अलग दृष्टिकोण रखना अमान्य है,
अच्छा करें या बुरा करें।
निस्संदेह दोनों तरफ बातें बनाना स्पष्ट है,
फिर भी समाज की परवाह करना हमारा धर्म है।

समाज में बदलाव लाने का सपना हमारा,
पढ़े लिखे लोगों के हाथ में बनाएंगे सहारा।
शिक्षा की दिशा में हम कदम बढ़ाएंगे,
ज्ञान की राहों में रोशनी बिखेरेंगे।

****

लघु कहानियाँ

बदलता हुआ गाँव–विकास की नई कहानी

नीलम कुमारी
हिंदी (सेम-vii)
सत्र : 2022 – 26

झारखंड (सिमडेगा) के घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच बसा हुआ सरलोंगा गाँव कभी विकास की दौड़ में बहुत पीछे माना जाता था। गाँव के लोग मेहनती थे, पर सुविधाओं की कमी ने उनकी तरक्की को रोक रखा था। गाँव की मुख्य आजीविका खेती, पशुपालन और छोटे–मोटे व्यवसायों पर निर्भर थी। नेटवर्क की समस्या, जानकारी का अभाव और सरकारी योजनाओं की सही समझ न होने के कारण गाँव का विकास धीमा था।

गाँव के बुजुर्ग रामलाल महतो अक्सर कहा करते थे,
"हमारे गाँव में हुनर की कमी नहीं है, बस सही रास्ता और सहारा चाहिए।"

सरलोंगा गाँव में कई तरह के पारंपरिक व्यवसाय थे। कोई बांस की टोकरी बनाता था, कोई मिट्टी के बर्तन, तो कोई चिरौंजी, महुआ, तेंदुपत्ता और लाह का व्यापार करता था। महिलाएं स्वयं सहायता समूह बना कर कई तरह की व्यवसाय करने लगीं थीं, लेकिन इन उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने में कठिनाई होती थी, क्योंकि गाँव में न सड़क पक्की थी और न ही मोबाइल नेटवर्क ठीक से काम करता था।

किसान सुखदेव उरांव सब्जी उगाते थे, लेकिन बाजार के भाव की जानकारी समय पर न मिलने तथा तय समय पर सब्जी बाजार तक नहीं पहुंचाने के कारण नुकसान उठाना पड़ता था। वे कहते हैं,
" अगर हमें सुविधा, सही कीमत और बाजार की जानकारी मिल जाए, तो हम शहर से कम नहीं कमा सकते।"

गाँव में कुल 28 परिवार हैं तथा गाँव की सबसे बड़ी समस्या–नेटवर्क है। मोबाइल फोन होते हुए भी लोग न तो ठीक से बात कर पाते थे और न ही इंटरनेट चला पाते थे। ऑनलाइन फॉर्म भरना, सरकारी योजनाओं की जानकारी लेना या बच्चों की पढ़ाई –लिखाई–सबकुछ मुश्किल था। छात्रा नेहा को कई बार ऑनलाइन परीक्षा के लिए पहाड़ी पर चढ़ना पड़ता था ताकि नेटवर्क मिल सके। नेटवर्क की इस समस्या ने पूरे गाँव को डिजिटल दुनिया से अलग कर रखा था।

ग्रामीण हाथियों के झुंड से भी काफी परेशान थे। जैसे ही शाम होने लगती, हाथियों का झुंड गांव की ओर आते हैं तथा फसलों को क्षति पहुंचाते हैं। कभी–कभी घरों को भी ढह देते इससे उस घर में काफी समस्या उत्पन्न हो जाती।

गाँव की स्थिति तब बदलनी शुरू हुई जब सरकार के प्रतिनिधियों ने गाँव का सर्वे किया। ग्राम सभा में पहली बार खुलकर समस्याओं पर चर्चा हुई। युवाओं ने नेटवर्क टावर लगाने की मांग उठाई, महिलाओं ने रोजगार और शौचालय की समस्या रखी। झारखंड सरकार की योजनाओं जैसे– मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना, मइया सम्मान योजना, महिला स्वयं सहायता समूह, पेंशन योजना, मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना को गाँव तक पहुंचाने का प्रयास हुआ। धीरे–धीरे गांव में कच्ची सड़क पक्की बनने लगी, पक्का मकान, नदी पार करने के लिए पुल बनने लगे।

गाँव में पहले शौचालय की समस्या थी, इससे महिलाओं को परेशानी होती थी और बीमारियाँ फैलती थी। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत जब शौचालय निर्माण की योजना गाँव में आई, तो शुरुआत में लोग संकोच कर रहे थे, लेकिन आशा कार्यकर्ता और आंगनबाड़ी सेविकाओं ने घर–घर जाकर समझाया की शौचालय स्वास्थ्य और सम्मान से जुड़ा है। धीरे–धीरे कई घरों में शौचालय बने। महिलाओं ने इसे खुले मन से अपनाया। रामलाल महतो की बहु सावित्री कहती है,

"अब हमें अंधेरे में बाहर नहीं जाना पड़ता, यह योजना हमारे लिए बहुत बड़ी राहत है।"

आज सरलोंगा गाँव आत्मनिर्भर बनने की ओर बढ़ रहा है। गाँव के युवा रोजगार के लिए बाहर जाने के बजाय गाँव में ही अवसर ढूंढ रहे हैं। महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत हो रही हैं। गाँव की विकास यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है लेकिन दिशा सही है।

****

अनजाना सफर, अपना–सा घर

नेहा प्रधान
इतिहास विभाग (सेम-i)
सत्र : 2025 – 29

छोटी उम्र की वह नन्ही–सी लड़की थी। मन में ढेर सारे सपने थे और दिल में हल्का–सा डर। जब वह पहली बार हॉस्टल पहुंची, तो उसके लिए वह जगह बिल्कुल अनजानी थी। चारों ओर नए चेहरे, अनदेखी दीवारें और अजीब–सी खामोशी–सब कुछ नया था। यह उसका पहला सफर था, पहली रात और पहली बार घर से इतनी दूर रहना।

रात को बिस्तर पर लेटते ही आँखों से आंसू बहने लगे। माँ की आवाज, घर की खुशबू और अपने कमरे की शांति–सब कुछ याद आने लगी। उसे लगा जैसे वह किसी दूसरी दुनिया में आ गई हो। शुरुआत में हर चीज अजनबी लगती थी–घंटी की आवाज, कतार में लगना और समय पर सब कुछ करना।

लेकिन धीरे–धीरे हालात बदलने लगे। समय के साथ वह डर कम होने लगा। आसपास की लड़कियाँ उसकी दोस्त बन गई। पहले जिन बातों से डर लगता था, वहीं अब ताकत बन गई, उसने सीखा की मुश्किलों से भागना नहीं, बल्कि उनका सामना करना जरूरी है। इस हॉस्टल में उसकी मुलाकात आशा से हुई। वह सच में आशा की किरण थी। वह पहले इंसान थी जिसने मुस्कुरा कर कहा,
"डर मत, आदत हो जाती है।"

धीरे–धीरे दिन गुजरने लगे, अब रोना कम हुआ, हँसी –मजाक बढ़ी। अब उसकी गहरी दोस्ती आशा के साथ हुई, जो हर छोटी बात पर हँसा देती और पढ़ाई के साथ–साथ जिंदगी जीना सिखाती।

अब हॉस्टल सिर्फ रहने की जगह नहीं रहा था, बल्कि वह घर बन चुका था–जहाँ उसने खुद को समझा, अपने सपनों को पहचाना और आत्मनिर्भर बनना सीखा। वह अपने फैसले खुद लेने लगी। दोस्तों के साथ देर रात तक बातें करना, हँसी–मजाक, पढ़ाई की परेशानियाँ, परीक्षा की चिंता, रिजल्ट की खुशी और छोटी–छोटी नोंकझोंक–सब कुछ इस सफर का हिस्सा बन गया। धीरे–धीरे वह नन्हीं लड़की एक मजबूत इंसान बन गई। यह सफर कहाँ से शुरू हुआ था और कहाँ तक पहुँचा–उसे खुद भी पता नहीं चला। बस

इतना जानती है कि यह सफर आसान नहीं था, लेकिन जरूरी जरूर था और फिर वो दिन आया.....

12वीं के बाद हॉस्टल छोड़ने का दिन। जिस जगह को वह कभी जेल जैसा मानती थी, आज वही जगह उसे अपनी लग रही थी। कमरे की दीवारें, वे खिड़कियाँ, वे बिस्तर – सबकुछ उसे रोकने की कोशिश कर रहा था। आँखें नम थीं, दिल भारी था। उसे एहसास हुआ कि घर सिर्फ वही नहीं होता है जहाँ हम खुद को बनाते हैं।

" हॉस्टल ने उसे सिर्फ पढ़ाया नहीं,
हॉस्टल ने उसे जिंदगी जीना सिखाया

****

बहाने और हौसले

सुष्मिता खेस्स
भूगोल (सेम-ii)
सत्र : 2024 – 28

अमन एक छोटे–से कस्बे में रहता था। घर की हालात बहुत अच्छी नहीं थी। पिता एक छोटी–सी दुकान चलाते थे तथा माँ घर संभालती थी। अमन पढ़ा लिखा जरूर था, लेकिन उसके अंदर एक अजीब–सी उलझन हमेशा रहा करती थी।

वह सपने तो देखा था, लेकिन उन सपनों के लिए मेहनत करने से कतराता था। जब भी किसी काम को करने में मुश्किल होती,अमन कह देता–
"मेरे घर की हालत ठीक नहीं है।"
"मेरे कोई पहचान नहीं हैं।"
"आजकल बिना सिफारिश के कुछ नहीं होता।"

धीरे–धीरे इस तरह के बहाने उसकी आदत में शामिल हो गए। उसके दोस्त आगे बढ़ने लगे, लेकिन अमन वहीं रुक–सा गया।

एक दिन उसके पिताजी की तबीयत खराब हो गई, जिसके कारण दुकान कई दिनों तक बंद पड़ी रही। अब घर में पैसों की कमी होने लगी। उस रात अमन देर तक सो नहीं पाया। पहली बार उसे एहसास हुआ कि अगर वह नहीं बदला, तो हालात कभी नहीं बदलेंगे।

कुछ दिनों पश्चात गाँव में एक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित हुई। वहाँ शेखर बाबू को सम्मानित किया जा रहा था। लोग कह रहे थे–
यह आदमी कभी हमारे जैसा ही था, लेकिन आज इसे देखो...

अमन उसे कार्यक्रम में गया। शेखर बाबू का भाषण एकदम साधारण था, उनके शब्दों में कोई बनावटीपन नहीं था, वे सच्चे थे। उन्होंने कहा–
"मैं भी आप ही की तरह एक आम इंसान हूँ, मैंने हमेशा कठिनाइयों का सामना किया, कभी भी हार नहीं माना और हमेशा धैर्य से काम किया, क्योंकि सफलता एक बार में नहीं मिलती है। इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।"
यह शब्द अमन के मन में गूंजते रहे।

कार्यक्रम के बाद अमन ने उनसे बात की। शेखर बाबू ने बताया कि उन्होंने कई बार असफलता देखी, कई बार लोग हँसे, कई बार पैसों का अभाव था। उन्होंने अमन से कहा–
"बेटा, किसी को बना–बनाया रास्ता नहीं मिलता, रास्ता खुद बनाना पड़ता है।"

उस दिन अमन ने एक फैसला लिया कि वह बदलाव की शुरुआत खुद से ही करेगा। अगले दिन सुबह वह जल्दी उठा। छोटे–छोटे लक्ष्य बनाए, आज इतना पढ़ना है, आज इस काम को पूरा करना है। शुरुआत में काफी निराश हुई–कभी थकान, कभी डर, कभी असफलता की याद लेकिन अमन हर दिन खुद से कहता–
" कल के बेहतर के लिए, मुझे आज थकान मिटाना ही होगा।"

धीरे–धीरे महीने गुजर गए। अब अमन का आत्मविश्वास भी बढ़ने लगा है। फलस्वरूप उसकी मेहनत रंग लाई। कुछ साल बाद उसे एक अच्छी नौकरी मिली। वह अपने माता–पिता का सहारा बना। जिस दिन अमन ने पहली बार अपने घर की हालत सुधरते देखी, उस दिन उसे यह समझ आ गया–
"सफलता बाहर से नहीं आती, वह अंदर के बदलाव से जन्म लेती है। समय बीतता चला गया। फिर एक बार अमन इस मंच पर खड़ा था, जहाँ कभी शेखर बाबू खड़े थे।
जब किसी युवा ने अमन से पूछा–
"आप यहाँ तक कैसे पहुंचे?"
अमन ने शांत स्वर में कहा–
"मैंने बहाने छोड़ दिए और हर रोज थोड़ा–सा बेहतर बनता गया।"

****

कोरोया के फूल और मैं

संध्या सिंह
भूगोल (सेम-ii)
सत्र : 2024 – 28

घाटियों की गोद में खिले कोरोया के फूल,
जैसे सफेद सादगी में छिपा कोई गीत,
सुबह की ठंडी हवा जब इन्हें छूती है,
तो लगता है, जैसे कोई माँ
प्यार से माथा सहला रही हो,

उन्हें देख कर रुक जाती हूँ,
भागती जिंदगी में कुछ पल ठहर जाती हूँ।
इन फूलों में कुछ तो है शायद वही जो मुझमें भी है,
शायद वही जो मुझमें भी है,
कुछ अनकही, कुछ अधूरी–सी

गर्मी के तपते मौसम में,
जब मन में थकान भरा हो,
इन फूलों की झलक,
शरीर को नयी उमंग देती है।

चलती बस की खिड़की से बाहर,
देखती हूँ उन्हें फिर सोचती हूँ,
क्या मुझे भी कोई यूं देखता होगा,
बिना कुछ कहे सिर्फ महसूस करता होगा,
बिना कुछ कहे सिर्फ महसूस करता हुआ।

जिन्दगी की भागदौड़ में,
हम खुद को ही खो देते हैं,
फिर कभी–कभी इन खामोश फूलों की खुशबू,
हमें अपने आप से मिलवा देती है।

इन घाटियों में खिले ये कोरोया के फूल,
अब सिर्फ घाटियों की शोभा नहीं,
बल्कि वो मेरी कविता की जान बन गए।

महिला दिवस विशेष

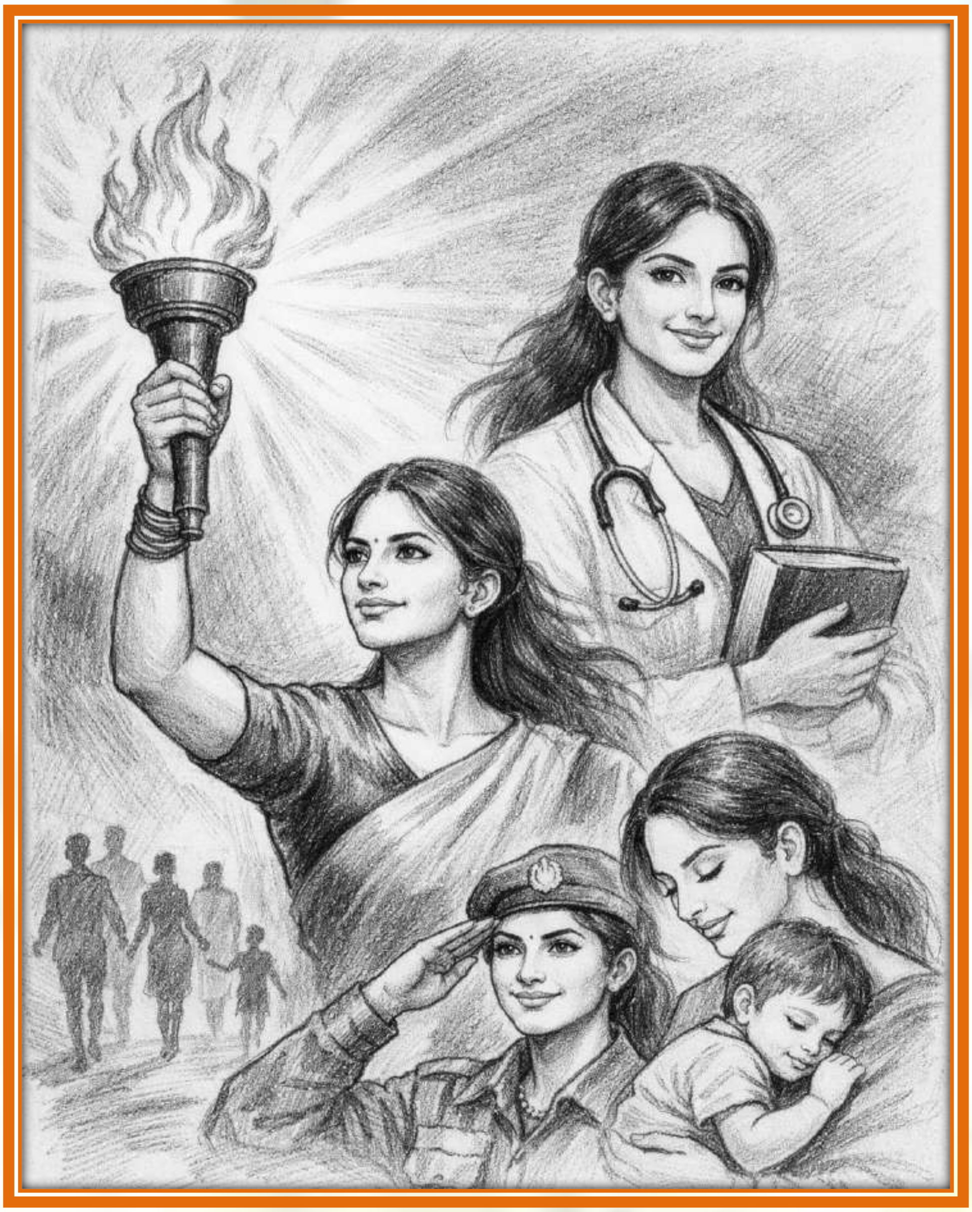

महिला सशक्तिकरण: विकास की नई दिशा

सादिया परवीन
अर्थशास्त्र (सेम-ii)
सत्र : 2024 – 28

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य है महिलाओं को सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए समान अवसर प्रदान करना। महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं को उस हद तक सशक्त बनाना, जिससे वे शिक्षा, स्वास्थ्य जीवन शैली, करियर आदि सहित अपने जीवन की चुनौतियों को स्वतंत्र रूप से सामना कर सकें। महिला सशक्तिकरण केवल एक विचार नहीं बल्कि एक क्रांति है जो समाज में महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भर बनाती है। यदि हम भारत जैसे अत्यधिक जनसंख्या एवं विकासशील देश की बात करें तो लगभग देश की आधी अर्थात 50% आबादी महिलाओं की है, फिर भी भारत में महिलाओं की स्थिति उतनी अच्छी नहीं है।

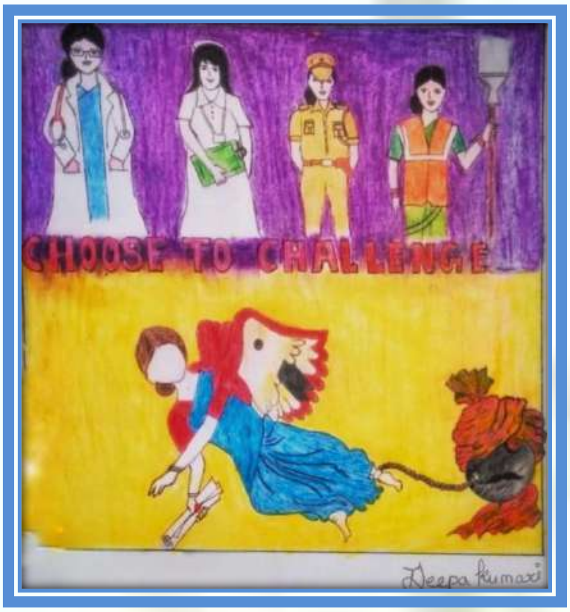

भारत व समूचा विश्व पितृसत्तात्मक समाज के ढांचे में रहता आया है। यहाँ यह स्पष्ट होता है कि जब हम महिलाओं के सशक्तिकरण की बात कर रहे हैं तो इसका आशय यह नहीं है कि अब पितृसत्तात्मक समाज बदलकर मातृसत्तात्मक समाज बनाया जाए।

भारत के पूर्वोत्तर की खासी वह कुछ अन्य जनजातियों में मातृसत्तात्मक समाज की अवधारणा देखी जा सकती है, जहाँ नारी ही प्रधानता है। वहाँ महिलाएं राजनीति, अर्थव्यवस्था व सामाजिक क्रियाकलाप में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती हैं।

यदि समाज को स्वस्थ दिशा में आगे ले जाना है तो निरपेक्ष रूप से सामाजिक संरचना तैयार करना होगा जिससे महिला पुरुष दोनों समान रूप से सशक्त होंगे।

भारत के इतिहास की बात करें तो यहाँ एक ऐसा भी कल था, जब महिलाओं को देवी तुल्य समझा जाता था। इस काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी हुआ करती थी। वही मध्यकाल में सती प्रथा के नाम पर महिलाओं को जिंदा जला दिया जाता था।

19वीं सदी के आरंभ में राजा राममोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया। ऐतिहासिक महिलाओं में रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू जैसी महान महिलाएं मिलती हैं जो किसी पुरुष से कम नहीं हैं।

महिला सशक्तिकरण अर्थात् हर क्षेत्र में समान अवसर प्राप्त होना –

1. सामाजिक सशक्तिकरण:

परिवार एवं समाज से मिलकर ही देश बनता है। इसी परिप्रेक्ष्य में कार्लमार्क्स ने कहा था, "किसी देश का विकास किस गति से होगा, इसका अनुमान उस देश की महिला स्थिति को देखकर ही लगाया जा सकता है।"

आज भी हमारे समाज में महिलाओं को पुरुष की तुलना में कमजोर समझा जाता है। महिलाओं को चूल्हा–चौका तक ही सीमित रखा जाता है, महिलाओं को चहारदीवारी में कैद कर लिया जाता है। आज भी भारत जैसे देश में बाल विवाह, सती प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथा देखने को मिलती है।

यदि समाज एवं देश का विकास करना है तो सबसे पहले स्त्रियों का सम्मान करना होगा।

2. शैक्षिक सशक्तिकरण:

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है लेकिन प्राचीन समय से महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया था।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल साक्षरता दर 74.04%है, जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 82.14% और महिलाओं की 65.46% है, जो लैंगिक असमानता को दर्शाता है। आज भी बिहार, राजस्थान जैसे राज्यों में महिलाओं की साक्षरता दर बहुत कम है। कहा जाता है –

"यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।"
–ज्योतिबा फुले

3. आर्थिक सशक्तिकरण:

महिलाएं बेहतरीन प्रबंधक होती हैं और उनके प्रबंधन क्षमता व्यवसाय में चमत्कार कर सकते हैं। देश में आज भी कामकाजी महिलाओं को अस्वीकार्य माना जाता है। आज भी महिलाओं को व्यावसायिक नौकरियों में उच्च पद नहीं मिल पाते। महिलाएं आत्मनिर्भर होंगी, तभी उनका आर्थिक विकास होगा।

4. राजनीतिक सशक्तिकरण:

देश की आधी आबादी होने के बावजूद भी आज लोकसभा में महिलाओं की हिस्सेदारी 15% ही है। महिलाओं को नेतृत्व एवं तर्क–वितर्क के काबिल नहीं समझा जाता है जबकि इंदिरा गांधी, द्रौपदी मुर्मू जैसी महिलाओं ने इस बात को गलत साबित कर दिया।

महिलाओं की भागीदारी राजनीति में बढ़ने से देश का उत्थान होगा। अफ्रीका के खंडा जैसे देशों में लोकसभा में 50% महिलाएं ही हैं। आज महिला भागीदारी में भारत अपने पड़ोसी मुल्कों नेपाल, बांग्लादेश से पीछे रह गया है।

चुनौतियां:

1. जनसांख्यिकीय असंतुलन:

भारत में 2021 के अनुसार लिंगानुपात 937/1000 है। यह लिंगानुपात चिंताजनक है। इसका प्रमुख कारण भ्रूण हत्या और पितृसत्तात्मक समाज है, जो लड़के की चाहत का प्रत्यक्ष परिणाम है। सबसे अधिक उत्तराखंड, हरियाणा और दिल्ली में है।

2. स्वास्थ्य समस्याएं:

- भारत में 70% किशोरियों को एनीमिया रोग है।
- लिंगानुपात 937 है।
- 2016–18 में मातृ मृत्यु दर 113 थी।

3.महिला शिक्षा की उपेक्षा:

- यूनेस्को के अनुसार 2022 में महिला साक्षरता दर 70.3 प्रतिशत है, जो वैश्विक औसत 79% से काफी कम है।
- दूसरी और पुरुष साक्षरता 87.7% है।
- बिहार और राजस्थान जैसे राज्य सबसे खराब स्थिति में हैं।

भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहे हैं–

1. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (2015):

इस योजना की शुरुआत 2015 में की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से जागरूकता पैदा करने और महिला कल्याण में सुधार करने पर केंद्रित है।

2. वन स्टॉप सेंटर (2016):

इसका उद्देश्य सार्वजनिक और निजी स्थान पर हिंसा से प्रभावित महिलाओं को समग्र समर्थन और सहायता प्रदान करना।

3. **महिला हेल्पलाइन योजना (2026):**

24 घंटे टोल फ्री दूरसंचार सेवा हिंसा से प्रभावित महिलाओं के लिए।

4. सखी निवास (1972):

कामकाजी महिलाओं के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान पर आवास की उपलब्धता।

5. नारी शक्ति पुरस्कार (2016):

यह सम्मान हर वर्ष 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर दिया जाता है।

6. निर्भया फंड (2013)

इसका सीधा प्रभाव महिलाओं की सुरक्षा संबंधी चिताओं पर है।

7. महिला ई हाट:

यह महिला उद्यमियों और स्वयं सहायता समूहों को समर्थन देने के लिए एक ऑनलाइन विपणन मंच है।

8. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना:

महिला उद्यमियों और स्वयं सहायता समूह के लिए सस्ते ऋण प्रदान करती है।

9. प्रधानमंत्री जन–धन योजना:

इस पहल से लगभग 56%से अधिक खाते महिलाओं के खोले गए।

अब धीरे –धीरे महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। चाहे वह समाज हो, राजनीति हो, शिक्षा हो, व्यवसाय हो, खेल हो–महिलाएं बुलंदियों को छू रही हैं।

हमारे देश के राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू एक महिला है। मनु भाकर एक ऐसी महिला है जिन्होंने ओलंपिक में पद जीतकर भारत का नाम रोशन किया। वह ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला है।

पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए लगभग एक तिहाई सीट आरक्षित किए गए हैं, जिसके कारण लगभग 40 लाख महिलाएं आगे आईं।

टीना डाबी, सृष्टि देशमुख, दिव्या तनवर जैसी महिलाएं आइ. ए. एस. जैसी कठिन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कीं।

आर्थिक क्षेत्र में भी महिलाएं आगे हैं—प्रियंका चोपड़ा, शुगर कॉस्मेटिक्स की सीईओ विनीता सिंह, फाल्गुनी नायर—नायका की सी ई ओ यह सभी एक आत्मनिर्भर एवं सफल महिलाएं हैं, जिन्होंने नवाचार को बढ़ावा दिया।

"महिला के संघर्षों के आगे नतमस्तक है पूरा संसार महिला सशक्तिकरण से ही होना है जगह का उद्धार।"

****

महिला सशक्तिकरण

रेशमा मुंडु
अर्थशास्त्र (सेम-ii)
सत्र : 2024 – 28

आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रंथ में भी नारी के महत्व को बताते हुए बताया गया है कि" यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:"
अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।

लेकिन नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसको सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। आज महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्तिकरण होने की नितांत आवश्यकता है। उनके आर्थिक फैसले, आय, संपत्ति आदि को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा कर सकती है।

देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है, जहाँ समाज में महिलाओं के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। उन्हें हर जगह लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी जैसी चीजों को दूर करने की आवश्यकता है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता के कई कारण है–

1. कई भारतीय महिलाएं महत्वपूर्ण राजनीतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थापित है, लेकिन ग्रामीण महिलाएं आज भी घर के चहारदिवारी में रहने को बाध्य हैं जिसके कारण स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मूलभूत सुविधाओं का लाभ नहीं ले पा रहे हैं।
2. शिक्षा के मामले में भी भारतीय महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा पीछे हैं।

3. शहरी क्षेत्र में महिलाएं सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में लगभग 30% काम करती हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर महिलाएं कृषि कार्य एवं दैनिक मजदूरी करती हैं।
4. पारिवारिक कारणों द्वारा सामाजिक राजनीतिक अधिकार (काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार आदि) को प्रतिबंधित किया गया है।

पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक असमानता और कुप्रथा को हटाने के लिए सरकार द्वारा कई संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाए गए और लागू किए गए। हालांकि बड़े विषय को सुलझाने के लिए महिलाओं के सहयोग की आवश्यकता है।

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनमें कुछ योजनाएं रोजगार, कृषि और स्वास्थ्य संबंधी हैं। इन योजनाओं का गठन भारतीय महिलाओं की परिस्थितियों को देखते हुए किया गया है ताकि समाज में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके–

1. **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना:**

यह योजना कन्या भ्रूण हत्या और कन्या शिक्षा को ध्यान में रखकर बनाई गई है।

2. **महिला हेल्पलाइन योजना:**

इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को 24 घंटे इमरजेंसी सहायता सेवा प्रदान की जाती है, महिलाओं के विरुद्ध होने वाली किसी भी तरह का हिंसा या अपराध की शिकायत इस योजना के तहत 181 नंबर डायल करके की जा सकती है।

3. **उज्ज्वला योजना:**

यह योजना महिलाओं की तस्करी और यौन शोषण से बचाने के लिए शुरू की गई है इसके अंतर्गत उनके पुनर्वास और कल्याण के लिए भी कार्य किया जाता है।

4. **महिला शक्ति केंद्र:**

यह योजना सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित है।

परिवर्तनशील समाज में आधुनिक युग की महिलाएं शिक्षित होकर स्वतंत्र पूर्वक जीवन जी रही हैं। वे अपने अधिकारों के लिए स्वयं निर्णय लेती हैं। अब महिलाएं घर की चहारदिवारी से बाहर निकलकर देश के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

आज भारतीय महिलाएं समाज में बदलाव और महिला सम्मान के लिए मिसाल बनी हैं। सहारनपुर की अतिया साबरी ऐसी मुस्लिम महिला है, जिन्होंने तीन तलाक के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया। तेजाब पीड़ितों के खिलाफ इंसाफ की लड़ाई लड़ने वाली वर्षा जवलगेकर को भी रोकने की नाकाम कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने इंसाफ की लड़ाई लड़ना नहीं छोड़ा। आज देश में नारी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। आज देश की महिलाएं जागरूक हो चुकी हैं।

महिला अधिकारों और समानता का अवसर पाने में महिला सशक्तिकरण ही अहम भूमिका निभा सकती है, क्योंकि महिला सशक्तिकरण महिलाओं को सिर्फ गुजारे– भत्ते के लिए ही तैयार नहीं करती, बल्कि उन्हें अपने अंदर नई चेतना को जगाने और सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति पाने का माहौल भी तैयार करती हैं।

निष्कर्षतः भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण को लाना महिलाओं के विरुद्ध होने वाले कुप्रथाओं के मुख्य कारणों को हटाना है। उन्हें शिक्षा तथा काम करने की आजादी

की आवश्यकता है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान करती हैं, जो उन्हें हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हमें महिलाओं को सम्मान और आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए।

****

आज की नारी

गायत्री महतो
बी. कॉम (सेम-vii)
सत्र : 2022 – 26

आज की नारी चुप नहीं है,
वह सवाल करना जानती है,
अपने हक की हर लड़ाई,
खुद लड़ना जानती है।

हाथों में कलम, आँखों में सपने,
कदमों में आत्मविश्वास भरा,
अब वह केवल राह नहीं देखती,
वह रास्ता खुद गढ़ती है जरा।

घर की चौखट उसकी सीमा नहीं,
आकाश उसके विस्तार है,
रसोई से लेकर संसद तक,
उसकी पहचान अपार है।

डर की दीवारें ढह चुकी हैं,
खामोशी अब टूटी है,
हर 'न' में उसकी ताकत है,
हर 'हाँ' में सहमति सच्ची है।

वह पढ़ती है, बढ़ती है,
अपने फैसले खुद लेती है,
किसी पर बोझ नहीं बनती,
अपने पैरों पर स्वयं खड़ी रहती है।

आज की नारी जान चुकी है,
सम्मान कोई दान नहीं,
अधिकार जन्म से मिलते हैं,
यह कोई एहसास नहीं।

यह बदलाव सिर्फ उसकी नहीं,
समाज की नई सोच का है,
जब नारी सशक्त होती है,
तब भविष्य मजबूत होता है।

आज की नारी प्रश्न है,
और उत्तर भी वहीं है,
वर्तमान की शक्ति वही है,
और कल की दिशा भी वही है।

****

क्या नारी एक कलंक है?

आफरीन रुकसार
एम. ए. (अंग्रेजी, सेम-ii)
सत्र : 2024 – 26

आज हर तरफ आंधी है, तूफान है,
नारी जो हर आंगन की लक्ष्मी है,
उसका हो रहा उत्पीड़न और अपमान है,
आज हर नारी परेशान है,
कि कहाँ उसकी पहचान है?

क्या नारियों की कोई अरमान नहीं होती?
क्या उनकी प्रतिष्ठा और अभिमान नहीं होती?
क्या उनकी कोई प्रतिभा–सम्मान नहीं होती?
क्या उनकी आँखों में आब–ए–चश्म,
और जिस्म में जान नहीं होती?

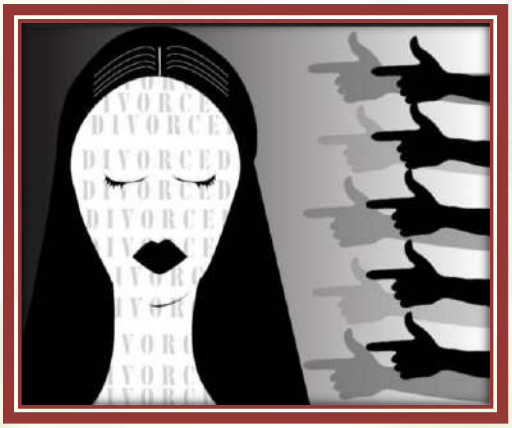

आज देश की बेटियों में हो रहा अत्याचार है,
जिस घर में हो बहु–बेटियाँ, ऐसा भी परिवार है,
आज देश में दरिंदों की बढ़ती रफ्तार है,
आज हर तरफ बढ़ती अशांति
और जुर्म का असर है।

आज अखबार में नारियों के प्रति
सिर्फ यही समाचार है,
कि प्रियंका रेड्डी, आसिफा, निर्भया, मनिषा वाल्मिकी और
मौमिता देवनाथ जैसी बेटियों का हो रहा बलात्कार है,
अमीरों के पास तो धन और स्वयं का,
व्यापार है किंतु गरीबों के पास,
ऐसा कौन–सा हथियार है?

माँग नहीं ये उनका अर्जित किया मान है,
दरिंदों के रूप में देश में ऐसे शैतान हैं,
अब बस कर ऐ आदमी! अब उनका भी अभिमान है,
सिर्फ वह आंगन की नहीं अपने गंतव्य की जान है,
ऐ आदमी! अगर तुम्हारा कोई, ईमान य थोड़ा–सा भी ज्ञान है,
तुममें उनके प्रति यदि जाग रहा सम्मान है,
तो आज तेरे अंदर का जाग उठा इंसान है।
****

एक कदम आत्मनिर्भरता की ओर

सुरभि कुमारी
अर्थशास्त्र (सेम-iii)
सत्र : 2023 – 27

नारी! एक कदम आत्मनिर्भरता की ओर,
नारी! तुम ही शक्ति का प्रतीक,
हर कदम आगे बढ़े नारी का मान,
बन कल्पना चावला, अंतरिक्ष की उड़ान,
बन सावित्रीबाई फुले, शिक्षा की ज्योति।

तुम ही माँ तुम ही बहन,
तुम ही शक्ति की पहचान,
क्यों छुपाती हो अपनी आवाज,
बन सुनीता विलियम्स,
कर अंतरिक्ष की उड़ान।

तुम ही शक्ति, तुम ही प्रेरणा,
हर क्षेत्र में बढ़ो आगे, बन नारी की पहचान,
बन मदर टेरेसा, चुन सेवा का मार्ग,
वन मिताली राज, कमा खेल में नाम।

नहीं है कोई सीमा, नहीं है कोई बंधन,
तुम स्वतंत्र, तुम अनंत, नारी की उड़ान।
उठो! जागो! पहचानो अपनी ताकत की आवाज।
तुम नारी नहीं, तुम हो शक्ति की पहचान।

****

नारीः एक मशाल,एक मिसाल

ब्यूटी बरवा
बी. कॉम (सेम-ii)
सत्र : 2024 – 28

वह अबला नहीं, वह ज्वाला है,
वह संघर्षों की उजाला है,
जिसे रोका गया हर मोड़ पर
वह आज खुद ही एक मिसाल है।

जब बात आई असमान की,
तो बनी कल्पना चावला
धरती की बेटी, अंतरिक्ष की शान
उसने साबित किया
नहीं कोई उड़ान की सीमा

जब रिंग में उतरी हिम्मत लेकर,
तो बनी मैरी कॉम–
पांच बार की विश्व विजेता
उसकी मुट्ठी में था आत्मसम्मान।

राजनीति के कठिन रास्तों पर,
दृढ़ कदमों से बढ़ती हुई –
वो थी इंदिरा गांधी
जिसने दुनिया को दिखाया नारी का नेतृत्व महान।

कानून की वर्दी पहनकर जब,
अन्याय से लड़ी सीना तान –
वो थी किरण बेदी
जिसने बदला व्यवस्था का मान।

सरलता में भी शक्ति छुपी है,
सेवा में भी एक पहचान –
ये सिखाया सुधा मूर्ति ने,
कि करुणा भी बन सकती है सम्मान।

ये है हर बेटी का विश्वास
जो कहती हैं –
"डर मत, रुक मत,
तेरे अंदर भी है वही आकाश।"

नमन है उन कदमों को, जिन्होंने राह बनाई है,
अंधेरों को चीर कर, एक नई सुबह सजाई है।
उठो कि अब जमाना तुम्हारी ही गूंज सुनेगा,
क्योंकि हर नारी के भीतर, एक नयी 'मिसाल' है।

****

सामयिकी(Current Affairs)

सामयिकी (current affairs)

1. भारतीय सेवा के केंद्रीय कमान ने 7 मार्च 2026 को उत्तर प्रदेश के लखनऊ में अपना पहला रणनीतिक संचार सम्मेलन आयोजित किया यह कार्यक्रम 'उभरते सूचना क्षेत्र में रणनीतिक संचार'विषय पर केंद्रित था जिसका उद्देश्य आधुनिक युद्ध में सूचना संचालन और धरना प्रबंधन को मजबूत करना है।
2. डॉ कृति कारंत वन्यजीव संरक्षण के लिए प्रतिष्ठित एस्मंड बी . मार्टिन 2026 का पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय बनी ।
3. 'बार्बी ड्रीम टीम 2026* में शामिल होने वाली दुनिया की पहली क्रिकेटर बनी – स्मृति मंधाना (भारत)।
4. स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान करने के लिए केरल राज्य ने MeHEALTH मोबाइल ऐप लॉन्च किया।
5. नवप्रवर्तक व्यावसायिक पर्यावरण सूचकांक (IBEI) 2026 में भारत को 54 वाँ स्थान मिला है।
6. मार्च 2026 के आम चुनाव के बाद नेपाल के नए प्रधानमंत्री बनेंगे बालेंद्र शाह । 35 वर्ष की आयु में यह नेपाल के इतिहास के सबसे युवा प्रधानमंत्री बनेंगे ।
7. भारत ने ICCपुरुष T20 विश्व कप 2026 का खिताब जीता है और प्लेयर ऑफ द मैच जसप्रीत बुमराह को दिया गया।भारत तीन बार T20विश्व कप जीतने वाली पहली टीम बन गई।
8. खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स (केआईटीजी) का पहला संस्करण 25 मार्च से 6 अप्रैल तक छत्तीसगढ़ में आयोजित किया जाएगा। यह खेल आयोजन रायपुर, जगदलपुर और सरगुजा – तीन शहरों में होगा और इसका उद्देश्य भारत भर के आदिवासी समुदायों में खेल प्रतिभा को बढ़ावा देना है। (एथलीट्स)
9. महाराष्ट्र सरकार ने बजट 2026से 2027 में 2 लाख तक की फसल कर्ज माफी के लिए पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर शेतकारी कर्जमाफी योजना शुरू की है। जो 30 सितम्बर 2025 तक लिए गए ऋणों को कवर करेगी ।
10. लान हवलदार केजी जॉर्ज इंडियन आर्मी के सैनिक थे 95 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया। इन्हें इनके साहस के लिए वीर चक्र से सम्मानित किया जा चुका है।
11. झारखंड राजभवन का नाम बदल गया है इस भवन का नाम अब लोक भवन होगा।केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश पर झारखंड राज्य भवन से राज्यपाल सचिवालय ने इसकी अधिसूचना जारी की है, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव नितिन मदन कुलकर्णी के हस्ताक्षर से जारी इस अधिसूचना में कहा गया है कि सभी अधिकारिक कार्यों के लिए राजभवन झारखंड को अब लोक भवन झारखंड कर दिया गया है केंद्र सरकार के निर्णय के बाद पूरे देशमें राजभवन का नाम बदलकर लोक भवन कर दिया गया है।
12. साम्राट शरदचन्द्र सोनक को झारखंड उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है ।

****

सामान्य ज्ञान

(General Knowledge)

सामान्य ज्ञान (general knowledge)

1. रतौंधी विटामिन ए की कमी से होने वाली बीमारी है
2. कागज का आविष्कार चीन में हुआ ।
3. एशिया की सबसे बड़ी लोहे की खान है–नोवामुण्डी
4. विश्व का सबसे लम्बा पर्वत तंत्र है – एंडीज पर्वत (अमेरिकी के पश्चिमी भाग में स्थित है)
5. भारत का सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग है – नेशनल हाइवें 44
6. भारत का प्रथम वायसराय–लॉर्ड कैनिंग और अन्तिम वायसराय – लॉर्ड माउंटबेटन।
7. भारत की पहली महिला आईपीएस अधिकारी –किरण बेदी (1972)
8. भारत का सबसे लम्बा बांध का नाम है – हीराकुंड बांध (उड़ीसा राज्य में स्थित है)
9. माउंट एवरेस्ट पर दो बार चढ़ने वाली पहली महिला थी – संतोष यादव।
10. भारत की पहली महिला राज्यपाल – सरोजिनी नायडू
11. भारत के प्रथम गवर्नर जनरल –लॉर्ड विलियम बैंटिक
12. भारत के राष्ट्रीय झंडे की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात है – 3:2।
13. महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता की उपाधि सबसे पहले नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने दी थी।
14. अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति का मुख्यालय लुसान (स्विट्जरलैंड) में है ।
15. संयुक्तराज्य राष्ट्रीय संघ की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को न्यूयॉर्क (मुख्यालय) में हुआ था।
16. देशबंधुके नाम से चितरंजन दास को जाना जाता है ।
17. शरीर की सबसे छोटी हड्डी होती है–स्टेपिज (कान की हड्डी)
18. यूट्यूब का आविष्कार 2005 में पेपाल (चंलचंस) के तीन पूर्व कर्मचारियों ने किया था है

– चाड हर्ली (Chad Hurley), स्टीव चेन (Steve Chen), और जावेद करीम (Jawed Karim) ने मिलकर की थी

19. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं की योजना सरकार ने वर्ष 2015 में शुरू की थी
20. सुकन्या योजना – 2015
21. प्रधानमंत्री मुद्रा भोजना (MUDRA) –2015
22. उज्ज्वला योजना–2016
23. लखपति दीदी योजना–2023
24. ड्रोन दीदी योजना–2023
25. मिशन इंद्रधनुष योजना–2014
26. प्रधानमंत्री मातृ बंधना योजना–2017

****

हिन्दी व्याकरण

हिन्दी में होने वाली सामान्य गलतियाँ

"हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और एक महत्वपूर्ण भाषा है। इसका शुद्ध और सही प्रयोग करना हम सबके लिए आवश्यक है। लेकिन कई बार हम बोलते या लिखते समय शब्दों की वर्तनी और प्रयोग में गलती कर देते हैं। इसलिए हमें अपनी हिन्दी को शुद्ध और प्रभावशाली बनाने का प्रयास करना चाहिए। आइए, हम सब मिलकर अपनी हिन्दी को सुधारें और सही शब्दों का प्रयोग करना सीखें।"

शब्द शुद्धि

अर्थ : किसी शब्द को सही वर्तनी और सही रूप में लिखना या बोलना शब्द शुद्धि कहलाता है।

परिभाषा : जब किसी शब्द की अशुद्धि को दूर करके उसे व्याकरण के अनुसार सही रूप में लिखा या बोला जाता है, तो उसे शब्द शुद्धि कहते हैं।

"हिन्दी में अक्सर कुछ शब्दों को लिखते समय अशुद्धियाँ हो जाती हैं। नीचे कुछ अशुद्ध और उनके शुद्ध रूप के उदाहरण दिए जा रहे हैं" —

	अशुद्ध	**शुद्ध**
1.	उपरोक्त	उपर्युक्त
2.	उज्वल	उज्ज्वल
3.	चिन्ह	चिह्न
4.	अंताक्षरी	अंत्याक्षरी
5.	अर्थात	अर्थात्
6.	कवियित्री	कवयित्री
7.	चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष
8.	पृष्ट	पृष्ठ
9.	ब्रम्ह	ब्रह्म
10.	ज्योतसना	ज्योत्सना
11.	प्रज्जवलित	प्रज्वलित
12.	मुहुर्त्त	मुहूर्त
13.	महात्म	महात्म्य
14.	वांगमय	वाङ्मय
15.	संग्रहित	संगृहीत
16.	वाल्मिकी	वाल्मीकि
17.	श्रृंगार	शृंगार
18.	श्राप	शाप
19.	श्रीमति	श्रीमती
20.	सौहार्द्र	सौहार्द
21.	सन्यास	संन्यास
22.	आर्शिवाद	आशीर्वाद
23.	छत्रछाया	छत्रच्छाया
24.	सन्मुख	सम्मुख
25.	श्रीमान	श्रीमान्
26.	साक्षात	साक्षात्
27.	कृतग्यता	कृतज्ञता
28.	अनुग्रहित	अनुगृहित
29.	त्यौहार	त्योहार
30.	ग्रिह	गृह

Blessed by
Inaugurated by
Most Rev. Fr. Arturo Sosa,SJ
In the dignified presence of
1. Fr. Vernon D'Cunha,SJ
Regional Assistant for South Asia
2. Fr. George Mutholil,SJ
Regional Assistant for South Asia
3. Fr. Claudio Paul,SJ
4. Fr. Ajit Kumar Xess,SJ
Provincial of Ranchi

संत जेवियर्स कॉलेज सिमडेगा

Abhijeet Kiro...